शैतान के औलिया

31

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बहुत रहम वाला है।

सब तआरीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं। हम उसी का शुक्र अदा करते हैं और उसी से मदद और माफ़ी चाहते हैं। अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि पर।
व बअद!

हज़रते इन्सान के दुनिया मे तशरीफ लाने के कुछ अर्से बाद ही आदम अलैहि. की औलाद दो गिरोहो में तक्सीम हो गई। एक गिरोह अपने ज़माने के नबी पर ईमान लाकर उसके साथ आयी शरीयत पर चलने वालों का बना तो दूसरा गिरोह नबी और शरीयत का इन्कारी होकर शैतान के साथियों–दोस्तों का बना। वक़्त गुज़रता गया लेकिन यह दोनों गिरोह बाक़ी रहे। अल्लाह और अल्लाह के नबी पर ईमान लाकर अल्लाह के दीन पर अमल करने वाला गिरोह ''औलिया अल्लाह'' कह लाया तो नबी पर ईमान न लाकर मनमानी ज़िन्दगी गुज़ारने और शैतान के सुझाए रास्ते पर चलने वाला गिरोह ''शैतान के औलिया'' का बना।

मुहम्मद सल्ल. की आमद और बअसत के बाद आप के लाए हुए दीन व शरीयत पर ईमान ना लाना या उसका इन्कार करना कुफ्र कहलाता हैं। कोई शख्स इबादत और इल्म में चाहें कितना ही ऊँचा मुकाम हासिल करले मगर मुहम्मद सल्ल. की लाई हुई शरीयत पर ईमान ना लाए तो वो मोमिन नही हैं, और ना ही अल्लाह का दोस्त हो सकता है। इसलिए कि ''बेशक अल्लाह के पास कुबूल होने वाला दीन सिर्फ इस्लाम है। (आले ईमान–आयत–19) और ''जो कोई इस तरीक़ा ए इस्लाम को छोड़कर कोई और दीन चाहे तो उसे अल्लाह हरगिज़ कुबुल नहीं करेगा। (आले इमान–आयत–85)

(1) अल्लाह का ज़िक्र न करने वाला शैतान का दोस्त है

आज हर क़ौम व मज़हब हत्ता कि मुश्रिकीन में भी उलेमा और इबादत गुज़ार लोग मौजूद हैं बड़े–बड़े दानिश्वर है, साहिबे इल्म हैं और अपने दीन के मुताबिक़ इबादात मे मशगूल हैं। मगर मुहम्मद सल्ल. की सब तालीमात पर ईमान नहीं लाते और ना यक़ीन रखते हैं बल्कि उसके मुन्कर (इन्कारी) हैं इसलिए वो अल्लाह के दुश्मन हैं। चाहे उनके मज़हब व फ़िर्क़े के लोग उन्हें अल्लाह वाले क्यों न समझें लेकिन हक़ीक़त में वोह शैतान के दोस्त है।

सदियों पहले भी कुछ मुश्रिकीन इल्म व इबादत में काफी आगें बढ़े हुए थे मगर वो पेगम्बरो की इताअत (पेरवी) नही करते थे। न उनकी लाई हुई शरियतो को मानते थें। ना ही उनकी तालीमात और खबरों को सच्चा समझते थे। न पैगम्बरों का कहा मानते थे। ये लोग न तो ईमान वाले थे और ना ही अल्लाह वाले। इनसे शैतानो का जुड़ाव था। जो इन्हें कुछ बाते बता दिया करते थे। इर्शादे बारी तआला हैं ''शैतान झूटो और गुनाहगारो पर उतरते है, उचटती सुनी–सुनाई (खबरें) उन्हें पहुंचा देते है और उनमें अक्सर झूटे है। (शोअरा आयत–222–23) वो हज़रात जो कशफ और करामत के दावेदार हैं।

अगर पैगम्बर के बताए तरीके पर न चले तो उनका झूट बोलना और उनसे शैतानो का झूटी बाते करना लाज़मी है। शिर्क, ज़ुल्म, बेहयाई की बातों, शोअबदी–बिदआत व खुराफ़ात, नाफ़रमानी और गुनाहों से उनके आमाल खराब हो जाते है, इसी वजह से शैतान उन पर उतरते हैं और उनके दोस्त बन जाते हैं। पस वोह शैतान के औलिया हैं। अल्लाह तआला ने फरमाया ''जो शख्स रहमान (अल्लाह) की याद से गफ़लत करें, हम उस पर शैतान मुकर्रर कर देते है, फिर वही उसका साथी होता है।'' (ज़ुख़रूफ़–आयत–36)

(2) शैतान के औलिया की पहचान

अगर किसी ने ज़रा भी रसूल सल्ल. की लाई हुई शरियत की मुख़ालिफ़त की और जिसे वह अल्लाह का वली समझता है अगर उससे कुछ करामात या करिश्मे ज़ाहिर हुए हैं। मसलन यह कि वह किसी की तरफ इशारा करता हैं तो वह मर जाता हैं या हवा में उड़ कर एक जगहं से दूसरी जगह पहुंच जाता हैं या कभी पानी पर चलता नज़र आता हैं या हवा से लोटे (बर्तन) में पानी भर लेता हैं या कभी गेब की बाते बताने लगता हैं या कभी लोगो की नज़रो से ओझल हो जाता हैं या किसी ने उसे पुकारा हालांकि वह गायब या मुर्दा था मगर वह आया और उनकी ज़रूरत पूरी कर दी या वह लोगो की चौरी हुई चीज़ की खबर देता हैं या नज़रो से औझल मरीज़ का हाल बता देता हैं– वगैराह तो इन बातों में कोई बात ऐसी नही हैं जो इस बात की दलील हों कि उन खूबियों का मालिक शख्स अल्लाह का वली हैं बल्कि औलिया अल्लाह तो इस बात पर एक राय हैं कि अगर कोई शख्स हवा में उड़े या पानी पर चले तो उससे धोखा नही खाना चाहीए। जब तक कि यह न देख लिया जाए कि वह कहां तक अल्लाह के रसूल सल्ल. की इत्तेबाअ करता हैं। आप सल्ल. ने जिन बातों का हुक्म दिया हैं उन पर कितना चलता है, और जिन बातो से मना किया हैं उनसे कितना रूकता हैं।

ऊपर ज़िक्र की गई बातें या करामते अगर किसी में पाई भी जाए और वह शख्स ना वुज़ू करता हों, न नमाज़े पढ़ता हों, न रोज़े रखता हों, नजासत व गंदगी में लथपथ हो, कुत्तों के साथ रहे, हमामों, कब्रिस्तानो या कूड़े के ढेर पर पड़ा रहे, बदन से बदबू आती हों, न शरई गुस्ल करता हों या जिसका सतर खुला रहता हों या नापाक चीज़े और मुर्दार खाता हो तो ऐसा शख्स शैतान का वली (दोस्त) हैं। इसलिए कि जो शख्स नजासतों व खबासतों से लथपथ हों। गन्दी और नापाक जगहो पर पड़ा रहता हो जो शैतान की आमाजगाह हैं। जिसकी खुराक सांप, बिच्छू, या दूसरे हराम जानवर हों या शराब या पैशाब वगैहरा पीता हों या गैरूल्लाह कों पुकारता हो या अल्लाह की मख़लूकात को मुश्किलकुशा और हाजत रवा समझता हों या अपने पीर की खानकाह की तरफ मुहं करके सज्दा करता हों या अल्लाह के साथ शिर्क करता हो या कुत्तो के साथ या आग के पास रहता हो या गेर मुस्लिमों के कब्रिस्तान उसका ठिकाना हो, कुरआन का सुनना ना पसन्द करता हों या फ़हश गीतों और अरआर के सुनने को पसन्द करता हों तो यह सब अलामात शैतान के दोस्त होने के हैं। क्यों कि नबी सल्ल. का इर्शाद हैं ''जिस घर में तस्वीर, जुन्बी या कुत्ता हों उसमें फरिशते दाखिल नही होते।'' (दारमी–2704 बुखारी3225 मुस्लिम–5793 अबुदाउद–227) और तन्हाई की जगहों के बारे में फ़रमाया ''ये शयातीन के हाज़िर होने के मक़ामात हैं।''(इब्ने माजा–296 अबु दाउद–06) और ''अल्लाह पाक हैं और पाक चीज़े ही पसन्द करता हैं।''(मुस्लिम–1722

तिर्मिजी-567 दारमी-)

(3) शैतानी हालात वाले

कुछ काहिनों (भविष्य बताने वालों) के साथी शैतान होते हैं जो बहुत सी बातें जिन्हें वो चोरी से सुन लेते हैं इन काहिनों को बता देते हैं। शैतान उन्हें सच और झूट मिलाकर पेश करते हैं। जैसा कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया "फ़रिश्ते बादलों के साथ उतरते हैं और आसमानों पर हुए फ़ैसलों का ज़िक्र करते हैं तब शैतान उन बातों को चोरी-छिपे सुन लेते हैं और (अपने दोस्त) काहिनों तक पंहुचा देते हैं जिसमें सौ झूट वोह अपनी तरफ़ से मिला देते है। " (बुख़ारी-3038, मुस्लिम-6093)

असवद अन्सी जिसने नबुवत का दावा किया था का कुछ शैतानों से तअल्लुक़ था जो उसे गैब की कुछ बातें बता दिया करते थे। जब मुसलमानों ने उसके खिलाफ़ जिहाद किया और उसकी बीवी पर उसका काफ़िर होना ज़ाहिर हो गया तो उसने असवद के खिलाफ़ मुसलमानों की मदद की और वह मुसलमानों के हाथों मारा गया। (अल बदाया वल निहाया-जिल्द-6 सफ़ा-347) इसी तरह मुस्लिमा कज़्ज़ाब (झूठा नबी) के साथ भी शयातीन थे जो उसे चोरी से सुनी गैब की खबरें पहुंचाया करते थे और बहुत से कामों में उसकी मदद करते थे। इसी तरह हारिस दमिश्की जिसने अब्दुल मलिक बिन मरवान के दौर में नबुवत का दावा किया था। शैतान उसके पैरों को बेड़ियों से आज़ाद कर देते थे। उस पर हथियारों की काट रोक देते थे। वोह जब सफेद पत्थर पर हाथ मारता तो पत्थर तस्बीह पढ़ने लगता था। वोह लोगों को दिखाता कि कुछ लोग घोड़ों पर हवा में उड़ रहे है और कहता यह फरिश्ते हैं। हालांकि वोह जिन्नात हुआ करते थे। जब मुसलमानों से किसी ने उसे नेज़ा (भाला) मारा तो उस पर इसका कुछ असर नहीं हुआ। लेकिन जब बिस्मिल्लाह कह कर भाला मारा गया तब वह हलाक हुआ।

ब हालते शैतानी कोई आग में कूदा या सीटियां और तालियां बजाने की महफिल में हाजिर हुआ तो यहां शैतान उसके जिस्म में घुस कर उसकी ज़ुबान से ऐसी बातें करते हैं जिनका उसे इल्म नहीं होता या जो उसकी समझ से बाहर होती हैं। कभी हाज़रीने मजलिस में से किसी का राज़ बयान कर देता हैं। कभी ऐसी ज़ुबान में बातें करता है जो अजनबी होती हैं कुछ लोगों के यहां शैतान ऐसे खाने, मेवे या मिठाईयां वगैरह लाते है। जो उस जगह (इलाके) में नहीं पाई जाती।

(4) कब्रों की ताज़ीम में ग़ुलू

अहले शिर्क व बिदअत जो कब्रों व मज़ारों की ताज़ीम करते हैं या मुर्दों को पुकारते हैं या दुआ में उन्हे वसीला बनाते हैं या यह अकीदा रखते हैं कि अगर इनके पास दुआ की जाए तो कुबूल होती हैं तो जाने-अन्जाने शैतान से दोस्ती निभाते हैं और उसके करीब होते हैं। इसलिए कि नबी सल्ल. ने फरमाया "अल्लाह की लानत हो यहूद व नसारा पर जिन्होने अपने अम्बियां की कब्रों को मसाजिद (इबादतगाह) बना लियां।" (बुखारी 1330, मस्लिम 862) आप सल्ल. ने अपनी वफात से 5 दिन पहले फरमाया था "तुम से पहले के लोग कब्रों को मस्जिदे (सज्दा गाह) बना लिया करते थे। खबरदार! तुम कब्रों को सज्दागाह ना बनाना। (मुस्लिम 864) और जब आप सल्ल. के सामने हब्शा के कलिसा (गिरजाघर) का जिक्र किया गया तो आप सल्ल. ने फरमाया "ये वोह लोग हैं कि जब उनमे का कोई नेक आदमी वफात पाता हैं तो उस की कब्र पर मस्जिद

बना लेते हैं ओर उसमे उसकी तस्वीर लगा देते हैं। कयामत के दिन यही लोग अल्लाह के नज़दीक बदतरीन मखलूक होंगे। (बुखारी–1276, मुस्लिम –857) और यह कि लोगों में बहुत ज्यादा बुरे वोह लोग होंगे जो जिन्दा होंगे और कयामत आ जायेगी और वह होंगे जो कब्रो को इबादत गाह बना लेते हैं। (मुसनद अहमद जिल्द 1, सफा 435, इब्ने हुब्बान, नसाई–707) और "तुम कब्रो पर मत बैठों और ना उनकी तरफ मुंह करके नमाज पढ़ों (मुस्लिम – 1642, अबुदाऊद –3229, नसाई–763) और मेरी कब्र को जश्न (मैलागाह) ना बना लेना तुम जहां कही रहो मुझ पर दुरूद भेजना, तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंच जायेगा (अबुदाऊद–2042, मुसनद अहमद हसन) और जब कोई मुझ पर सलाम भेजता है तो अल्लाह मेरी रूह को इस हद तक लोटा देता है कि मैं उसके सलाम का जवाब दे दूं। (अबुदाऊद –2041, मुसनद अहमद–ज़ईफ) और अल्लाह ने मेरी कब्र पर फरिश्ते तैनात कर रखें हैं। जो मेरी उम्मत का सलाम मुझ तक पहुंचा देते हैं (नसाई–1285, दारमी –2815) और यह कि जुमे की रात और दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो, तुम्हारा दुरूद मेरे सामने पैश होगा। (यह सुन कर) सहाबा ने अर्ज किया हमारा दुरूद आपके सामने किस तरह पैश होगा। जबकी आपका जिस्म मुबारक बोसीदा हो जायेगा। आप सल्ल. ने फरमाया अल्लाह ने ज़मीन पर अम्बियां का गोश्त हराम कर दिया है (अबुदाऊद–1047, नसाई–1377, इब्ने माजा–1085, ज़ईफ)

कोमे नूह (अलैहि.) के माबूद वद्द, सुवाअ, यगूस, यऊक और नस्र जिनका जिक्र सूरेह नूह आयत 23 में है, इब्ने अब्बास रजि. के बयान के मुताबिक अपनी कोम के नैक लोग थे। जब वोह मर गये तो शैतान ने लोगों को पहले उनकी कब्रों पर बिठाया (मुअतकिफ किया)। फिर उनकी मूर्तियां बनवा कर उनकी पूजा पर लगा दिया। दुनिया में यही से बुत परस्ती और शिर्क की शुरूआत हुई।

(5) शैतानी अहवाल

मौसीकी (संगीत) और फिज़ूल बातें मुश्रिकीन की रस्मों से है। इर्शादे बारी तआला है "उनकी नमाज काबे के पास सिर्फ सीटी और तालियां बजाना रह गई थी। (अनफाल–35) जबकि नबी सल्ल. और सहाबा किराम रजि. की इबादत वही थी जिसका हुक्म अल्लाह ने दिया है यानि नमाज, रोज़ा, ज़कात, हज, तिलावते कुरआन और जिक्र व दुआ वगैरह। नबी सल्ल. ओर सहाबा रजि. कभी गीत संगीत सुनने के लिए जमा नहीं हुए। ना उन्होने हाथों से तालियां और मुंह से सीटियां बजाई। ना उन पर कभी वजद (हाल) तारी हुआ और ना कभी उन की वजदओ सुरूर में चादर गिरी बल्कि इस बारे में जो कुछ बयान किया जाता है कि मुताअलिक अहले इल्म का इजमाअ है कि सब झूट और बकवास है।

(6) शैतान का धोखा अपने दोस्तों के साथ

जो शख्स शरियत का मामूली इल्म रखता हो और अपनी करामत और शोअबदे बाज़ी में किसी जिन्न की मदद लेता हो जो उसे खुराफती समाअ के दौरान एक जगह से दूसरी जगह या एक शहर से दूसरे शहर ले जाऐ तो ऐसा शख्स धौखे का शिकार है और शयातीन के फंदे में है। इनमे कुछ लोग ऐसे भी है जो यह नहीं जानते कि ये जिन्नों के

करतूत है। यह लोग शैतान के धोखे को भी औलिया अल्लाह की करामत समझते है। इसकी वजह यह होती है कि कुरआन व सुन्नत का इल्म न होने या इल्म कम होने की वजह से वोह रहमानी करामातों और शैतानी धोखों में फर्क नहीं कर पाते और शैतान के मक्र औ फरैब का शिकार हो जाते है। मुश्रिको के दिलों में शैतान यह सोच डालता है कि जिस बादशाह, नबी, शैख या बुजुर्ग का बुत बनाया है। उनकी नज़रों नियाज़ जैसी इबादत का हासिल यह है कि उसे वसीला बनाया जाए और उसकी शफाअत हासिल की जाए। लोग यह समझते है कि हम किसी नबी, वली या बुजुर्ग की नज़रों नियाज़ करके उन्हें खुश कर रहें हैं। लेकिन हकीकत में वोह शैतान की पूजा कर रहे होते हैं।

इन सबको जमा करके कयामत के दिन अल्लाह तआला फरिश्तों से कहेगा कि यह लोग तुम्हारी इबादत करते थे? वो कहेंगे–तेरी ज़ात पाक है और हमारा वली (दोस्त) तो तू है न कि यह बल्कि ये लोग जिन्नों की इबादत करते थे। इनमे से अक्सर का उन्ही (जिन्नों) पर ईमान था।'' (सूरह सबा–आयत–40–41)

(7) शैतान झूटे माअबूदों की शक्ल में

जो लोग सूरज, चांद और सितारों की पूजा करते है। जब इनके आगे सज्दा करने वाले होते है तो शैतान इनके साथ मिल जाता है ताकि सज्दा उसी के लिए हो। कभी शैतान उस शख्स की सूरत में ज़ाहिर होता है। जिससे मुश्रिकीन अपनी हाजते मांगते है या जिसे मदद के लिए पुकारते है। इसी तरह शैतान कभी किसी वली या शैख की शक्ल में लोगों के सामने आता है। कुछ लोग संतरा (नारंगी) का छिल्का, मेंढक की चर्बी, ओर संगे तलक (एक चमकदार सफेद पत्थर) अपने जिस्म पर मल कर आग में दाखिल हो जाते हैं जिसकी वजह से आग उन्हें नुक्सान नहीं पहुंचाती। मगर देखने वाले समझते हैं कि यह कोई करामत हैं। जिन हजरात पर हक वाज़ेह हो जाता है। वो यह जान लेते है कि ये सब शैतानी अफवाल है। वोह तो अल्लाह से तौबा कर लेते हैं और जो नहीं जान पाते वो शैतान के जाल में फंसे रहते हैं।

(8) शैतानी अकाइद

कुछ लोगों का यह अकीदा है कि वलायत नबुवत से अफज़ल है। यह लोग आम लोगों को धोखा देने के लिए कहते हैं कि मुहम्मद सल्ल. की वलायत आप सल्ल. की नबुवत से अफज़ल है। वोह यह कहते है कि ''नबुवत का दर्जा बीच में है, रसूल से कुछ ऊपर और वली से नीचे।'' इन लोगों का यह भी कहना है कि हम मुहम्मद सल्ल. की वलायत में जो आपकी रिसालत से बढ़कर (अफज़ल) है, शरीक हैं। इनका यह दावा एक अज़ीम गुमराही है। क्योंकि वलायत में मुहम्मद सल्ल. के हम रुतबा तो इब्राहीम अलैहि. और मूसा अलैहि. तक न हो सके तो ऐसा अकीदा रखने वाले किस खेत की मूली है। कुछ लोगों का यह अकीदा है कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को 6 दिनों में पैदा नहीं किया और न वोह यह अकीदा रखते हैं कि अल्लाह ने कायनात की चीजों को अपनी मर्जी और कुदरत से पैदा किया है। और वोह यह बात भी नहीं मानते कि अल्लाह को तमाम बातों का इल्म रहता है। ऐसे लोगों का कुफ्र यहूद व नसारा के कुफ्र से बढ़कर तो है ही बल्कि मुश्रिकीन के कुफ्र से भी बढ़ा हुआ है इसलिए कि यह बात सभी मानते हैं कि अल्लाह ने ही आसमानों और ज़मीन को बनाया है। एक गुमराह फिर्के ने अल्लाह के 'अस्मा व सिफात' (नाम व खूबियां) का इन्कार किया और कहा के इंसान अपने आमाल के लिए

मजबूर है तो एक दूसरे गुमराह फिर्के का अकीदा है कि अगर कोई गुनाहे कबीरा करने के बाद बिना तौबा किये मर जाए तो वह हमेशा जहन्नम में रहेगा। जबकि हम जानते है कि "शिर्क ऐसा गुनाह है जिसे अल्लाह माफ नहीं करेगा। उसके अलावा जितने गुनाह है, वह जिसके लिए चाहेगा माफ कर देगा।" (निसा-48, 116, माईदा-आयत-72) कुछ लोग जिब्राइल अलैहि. को महज़ एक ख्याल करार देते हैं और न सिर्फ यह कि खुद को अल्लाह का दोस्त बताते हैं बल्कि वली (दोस्त) को नबी व रसूल से अफ़ज़ल समझते हैं। उनका यह भी कहना है कि वो बिना किसी वासते (ज़रिये) के सीधे अल्लाह से इल्म हासिल करते हैं।

(8) शैतानी फ़रेब की कुछ मिसाले

शैतान अपनी ताकत भर इन्सान को गुमराह करता है। पस जो शख्स सूरज, चांद, तारों को पूजता है और उनसे दुआऐं मांगता हैं तो शैतान उस शख्स पर नाज़िल हो कर उससे बातें करता है। और कुछ बातों की उसे खबरें भी देता है। लोग इसे कवाकिब (तारों) का करिश्मा समझते हैं हालांकि वोह शैतान होता है। शैतान कुछ मामलात में इंसान की मदद तो करता है। लेकिन इस नफे से ज्यादा नुकसान पहुंचाता है। अल्लाह किसी की तौबा कुबूल कर ले तो और बात है वरना जो शैतान का दोस्त बन गया उसका अंजाम बहुत बुरा है।

कभी-कभी शैतान बुत परस्तों से भी बातें करता है और उनसे भी जो किसी गायब शख्स या मय्यत (मुर्दा) से फरियादें करते हैं। यही मामला शैतान उनके साथ भी करते हैं जो मय्यत से दुआ मांगते या उसे वसीला बनाते हैं या यह अकीदा रखते हैं कि किसी कब्र के पास दुआ करना घर व मस्जिद में दुआ करने से बेहतर है । ऐसा करने के लिए ये लोग इस मनगढ़त हदीस को दलील बनाते हैं "जब मुश्किलात तुम्हें मजबूर कर दे तो कब्र वालों के पास जाओ।" कभी मज़ारात के पास मुश्रिकों और गुमराह मुसलमानों के साथ ऐसे मामलात पेश आते हैं जिन्हे वोह करामात समझते हैं जबकि वोह शैतानी करतूत होते है। जैसे: कब्र (मज़ार) के पास पायजामा रखे तो उसमे गिरह (गांठ) पड़ जाती है। मिर्गी ज़दा मरीज कब्र के करीब बैठाया जाए तो शैतान उसे छोड़ कर जाता नज़र आता है वगैरह। एक आदमी हवा में उठाया गया तो जैसे ही उसने 'लाइलाहा इल्लल लाह' पढ़ा तो नीचे गिर पड़ा। कोई देखता है कि कब्र फटी और उससे एक इंसान बाहर निकला। वोह समझता है कि मुर्दा निकल पड़ा। हालांकि वोह शैतान होता हैं। अगर सच्चे दिल से ऐसे वक्त 'आयतुल कुर्सी' (बकरा आयत-255) पढ़ी जाए तो यह तमाशा खत्म हो जाता है क्योंकि शैतान अज़ान और तौहीद का कलमा (बात) सुनते ही भाग खड़ा होता है।

अल्लाह से दुआ है कि वह हमें शैतान का नाफ़रमान और अपना और अपने रसूल सल्ल. का फरमाबरदार बनाए। हमें शैतान का दुश्मन ओर अपना दोस्त बनाए। अपने दीन की सही समझ अता करें। दीन के सीधे रास्तो पर चलाए और जब हमें मौत आए तो इस हाल में आए कि हम मुसलमान (फरमाबरदार) हों।

आमीन या रब्बल आलमीन

मारखूज़
औलिया ए हक़ व बातिल
अज़-शैख इब्ने तीमिया रह.

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
Email: saeed.tonk@gmail.com
मो.09887239649, 09214836639